गाँव के लुहार

नवीन जोशी

वे गाँव के लुहार भी बड़े ही निराले होते थे,
दिल के हरे और तन के थोड़े काले होते थे।
न एक जगह कहीं पर उनका ठिकाना होता,
कुछ दिन यहाँ रूककर कहीं ओर जाना होता।
उनके आने की खबर का किस्सा आम होता,
लोकीया लुहार उनके मुखिया का नाम होता।
केवल श्रम से ही दो वक्त के निवाले होते थे।

वे गाँव के लुहार भी बड़े ही निराले होते थे।
वे झोली में दौलत नहीं प्यार लेकर चलते,
बैलगाड़ी पर ही सारा संसार लेकर चलते।
हम उन-सी चुनौती खुद पर कहां धर पाते हैं?
उन तंबुओं के सामनें महल बौने नजर आते हैं।
उनके हाथ-पैरो पर रेखाएं नहीं छाले होते थे।

वे गाँव के लुहार भी बड़े ही निराले होते थे।
वो उनका भारी आवाज़ से कलेजे का छेदन,
कुल्हाड़ी, कैंची, चाकू की धार का निवेदन।
अब हम उनका इंतजार करते ही रह जातें हैं,
ये खेत के चनें अब बिना भूने ही रह जातें हैं।
वे जहां भी ठहरते वहां रंगीन उजाले होते थे,
साधु-सा जीवन स्वयं ईश्वर के हवाले होते थे।

वे गाँव के लुहार भी बड़े ही निराले होते थे।

शोध छात्र, पद्मश्री नारायणदास रामानन्ददर्शन अध्ययन एवं शोध संस्थान, जयपुर